वैशाख अमावस्या की कथा PDF

हिंदू धर्म के अंतर्गत वैशाख अमावस्या की बहुत सी कथाएं हैं परंतु उनमें से एक प्रसिद्ध कथा यह है कि प्राचीन समय में एक शहर में धर्म वर्ण नाम का एक ब्राह्मण रहता था मैं ब्राह्मण पूर्ण रूप से शुद्ध सात्विक प्रवृत्ति का था वह काफी करीब था परंतु इसके बावजूद वह अच्छे कामों में लगा रहता था जिस भी व्यक्ति को सहायता की जरूरत होती है उसकी मदद अवश्य करता है और हमेशा साधुओं की इज्जत करता था सभी सत्संग में भी भाग लेता था

एक दिन जब है एक सत्संग में बैठा था तो उसे पता चला कि भगवान विष्णु का नाम लेने से कलयुग के सभी प्रकार के संकट दूर हो जाते हैं और भगवान हरि का नाम लेने से शुभ फल की प्राप्ति होती है उसने भगवान जी का नाम लेना शुरू किया और जीवन की मुक्ति के लिए वानप्रस्थ को अपना लिया और सन्यासी बन गया जब वह भ्रमण के लिए गया तो उसने देखा कि कहा उसके पूर्वजों को कष्ट हो रहा है

धर्म वर्ण ने यह सब देखने के बाद अपने पूर्वजों से पूछा कि यह सब क्या हो रहा है तो उन्होंने बताया कि संसार की जीवन का त्याग करने और पारिवारिक जीवन के सभी नियमों का पालन ना करने की वजह से उनका परिवार आगे नहीं बढ़ सका इसी कारण यह सब हो रहा है अगर धर्म वर्ण को संतान नहीं होगी तो आने वाली पीढ़ी का पिंडदान कौन करेगा वे यह सब भोगते रहेंगे पर उन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी इसलिए उन्होंने मुझसे कहा कि हमारी मुक्ति के लिए अपने गृहस्ती जीवन पर ध्यान दो तभी हमें मुक्ति मिलेगी और आने वाली वैशाख के दिन हमें पिंड दान दें यह सभी बात सुनने के बाद वह अपने पूर्वजों को वचन देता है कि वह सन्यासी के जीवन को त्याग देगा इसके बाद उसने अपने गृहस्ती जीवन पर ध्यान दिया और कुछ साल बाद उसे बच्चा हुआ और आने वाली वैशाख के दिन वे पूर्ण विधि-विधान से पिंडदान करते हैं

pdfinbox.com

pdfinbox.com

pdfinbox.com